भूमिका

मानव सभ्यता के विकास के क्रम में प्रत्येक समाज और परिवेश में प्रेम तत्त्व अवश्य विद्यमान रहा है। प्रेम भाव के द्वारा ही व्यक्ति में समाजिकता की भावना का विकास हुआ है। प्रेम ही व्यक्ति के 'मैं' की भावना का 'हम' की भावना में विकास करता है। जब किसी व्यक्ति के हृदय में प्रेम भाव की उत्पत्ति होती है तो उस व्यक्ति के लिए सब कुछ प्रेममय हो जाता है। तब प्रेम ही व्यक्ति का जीवन होता है और प्रेम ही जीवन जीने का ढंग होता है। इसी कारण प्रेम की प्रासंगिकता भी उतनी ही अधिक महत्त्वपूर्ण है जितना महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का जीवन है। हिंदी साहित्य में भी आरंभ से ही प्रेम भाव का चित्रण विभिन्न रूपों में हुआ है। कहानी विधा के विकास की लगभग सौ वर्षों की यात्रा में कहानी विधा में अनेक परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं। ये परिवर्तन कथ्य एवं शिल्प दोनों ही स्तरों पर दृष्टिगोचर होते हैं। हिंदी कहानी का मूलभाव भी युग, परिस्थितियों के अनुसार बदल गया है। ये बदलाव कहानी के सभी तत्त्वों में दिखाई देते हैं। कहानियों में उपस्थित प्रेम के स्वरूप में भी व्यापक परिवर्तन हमें देखने को मिलते हैं।

हिंदी कहानी का विषय-क्षेत्र लगभग सभी अनुशासनों से रहा है, जिसका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष संबंध समाज से जुड़ा हुआ है। हिंदी कहानी में 'प्रेम' एक ऐसा ही शाश्वत भाव-तत्त्व है जो लगभग कहानी के विकास के साथ ही इसके केंद्र में उपस्थित रहा है। सामाजिक परिस्थितियों तथा विभिन्न साहित्यिक आंदोलनों के कारण कहानी के भाव एवं शिल्प पक्ष अवश्य परिवर्तित हुए लेकिन प्रेम तत्त्व प्रत्येक दशक की कहानी में विद्यमान अवश्य रहा है। शुरुआत से बात करें तो हिंदी कहानी की पहली प्रेम कहानी चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' की 'उसने कहा था' मानी जाती है, जिसमें सर्वप्रथम प्रेम के उद्दात रूप का चित्रण किया गया है । प्रेम का आदर्श रूप 'गुलेरी जी' अपनी कहानी में दिखाते हैं। तत्पश्चात विभिन्न कहानी आंदोलनों के प्रभाव में लिखी गई कहानियों में भी प्रेम की झलक साफ़ दिखाई देती है, परंतु परिस्थितियों के अनुसार प्रेम का स्वरूप परिवर्तित होता हुआ दिखाई पड़ता है।

प्रेम क्या है? उसकी प्रकृति क्या है? प्रेम का स्वरूप क्या है? प्रेम की सीमा क्या है? प्रेम मन में उत्पन्न होता है? देह से उत्पन्न होता है? अथवा आत्मा से उत्पन्न होता है? संस्कृतियों के टकराव से प्रेम के स्वरूप में क्या परिवर्तन होते हैं? क्यूँ बदलता है प्रेम का स्वरूप और साहित्य में इस बदलते हुए स्वरूप को किस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है? प्रेम के इस बदलते हुए स्वरूप के पीछे प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में कौन-कौन से कारण विद्यमान रहें हैं? इन सभी प्रश्नों के उत्तर हमें संबंधित साहित्य का अध्ययन करने पर ही ज्ञात होंगे। अपने इस शोध कार्य में मैंने हिंदी कहानियों में प्रेम के इस बदलते हुए स्वरूप का अध्ययन किया है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय "हिंदी कहानियों में प्रेम" है। जिसमें सभी प्रेम कहानियों को आधार न बनाकर शोध कार्य की सीमानुसार अखिलेश द्वारा संपादित पुस्तक 'दस बेमिसाल प्रेम कहानियाँ' को ही अपने शोध कार्य का आधार बनाया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को मैंने चार अध्यायों में विभाजित किया है। **प्रथम अध्याय** 'प्रेम और हिंदी साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति' है। प्रथम अध्याय को पुन: दो उपअध्यायों 'प्रेम - अर्थ, परिभाषा और अवधारणा' और 'हिंदी साहित्य में प्रेम की अभिव्यक्ति' में विभाजित किया गया है। प्रथम उपअध्याय में मैंने प्रेम शब्द के शाब्दिक अर्थ, प्रेम की प्रकृति, प्रेम की अवधारणा और विभिन्न विद्वानों द्वारा दिये गए प्रेम संबंधी विचारों को जानने का प्रयास किया गया है। समाजविज्ञानी प्रेम को किस रूप में व्याख्यायित करते हैं? दर्शनशास्त्री प्रेम के बारे में क्या विचार प्रस्तुत करते हैं? साहित्यकार प्रेम को किस रूप में देखते हैं? मनोविज्ञानी प्रेम के लिए मनुष्य के किस भाव को महत्त्वपूर्ण मानते हैं? आदि सभी दृष्टियों से प्रेम के रूप को देखने का प्रयास इस उपअध्याय के अंतर्गत किया गया है।

लघु शोध-प्रबंध का **द्वितीय अध्याय** 'हिंदी कहानी और प्रेम : चयनित कहानियों की अंतर्वस्तु का विश्लेषण' है। इस अध्याय को भी कहानियों के विश्लेषण की सुविधानुसार पुन: तीन उपअध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम उपअध्याय 'स्वतंत्रतापूर्व हिंदी प्रेम कहानियाँ' है। इस

उपअध्याय में देश के स्वतंत्रता प्राप्त करने से पूर्व के समय में लिखी गई तीन प्रमुख प्रेम कहानियों 'उसने कहा था', 'आकाशदीप' और 'जाह्नवी' की अंतर्वस्तु का विश्लेषण किया गया है। 'उसने कहा था' को हिंदी की प्रथम प्रेम कहानी माना जाता है। इस कहानी में प्रेम के आदर्श रूप का चित्रण किया गया है। जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'आकाशदीप' कहानी भी प्रेम के आदर्श त्याग के रूप को ही दिखाती है। जैनेन्द्र द्वारा लिखित 'जाह्नवी' कहानी में प्रेम के वियोग पक्ष का चित्रण किया गया है। द्वितीय उपअध्याय 'स्वतंत्रता पश्चात हिंदी प्रेम कहानियाँ' है। इस उपअध्याय में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात के समय में लिखी गई जो प्रमुख प्रेम कहानियाँ मैंने ली हैं वें रेणु द्वारा लिखित 'तीसरी कसम', कमलेश्वर द्वारा लिखित 'नीली झील', शेखर जोशी द्वारा लिखित 'कोसी का घटवार', रांगेय राघव द्वारा लिखित 'गदल', निर्मल वर्मा द्वारा लिखित 'परिंदे', मन्नू भंडारी द्वारा लिखित 'यही सच है' और रवींद्र कालिया द्वारा लिखित 'तीस साल बाद' हैं। द्वितीय अध्याय का तृतीय और अंतिम उपअध्याय 'भूमंडलीकृत समय की हिंदी प्रेम कहानियाँ' है। इस उपअध्याय में मृदुला गर्ग द्वारा लिखित 'मीरा नाची', नीलाक्षी सिंह द्वारा लिखित 'रंगमहल में नाची राधा' और सुषमा मुनीन्द्र द्वारा लिखित 'डसो मगर प्यार से' कहानी की अंतर्वस्तु का विश्लेषण किया है।

लघु शोध-प्रबंध का **तृतीय अध्याय** 'चयनित कहानियों में प्रेम का बदलता हुआ स्वरूप' है। इस अध्याय को अध्ययन की सुविधानुसार और कहानियों में झलकते प्रेम के स्वरूप के अनुसार दो उपअध्यायों में बाँटा हैं। प्रथम उपअध्याय 'आदर्श प्रेम की अवधारणा' है। इस उपअध्याय में प्रेम के आदर्श स्वरूप का चित्रण करने वाली कहानियों में उपस्थित प्रेम भाव का विश्लेषण किया गया है। 'उसने कहा था', 'आकाशदीप', 'जाह्नवी' कहानी के प्रेम का विश्लेषण इसी उपअध्याय के अंतर्गत किया गया है। द्वितीय उपअध्याय 'प्रेम की नवीन अभिव्यक्ति' है। इस अध्याय में प्रेम के आदर्श रूप से भिन्न अवधारणाओं का चित्रण करने वाली कहानियों का विश्लेषण किया गया है। इनमें प्रेम के विविध स्वरूप हमें दिखाई पड़ते हैं। 'तीसरी कसम', 'नीली झील', 'कोसी का घटवार', 'गदल' कहानियों में प्रेम लोकरंग में लिपटा हुआ दिखाई देता है तो 'परिंदे', 'यही सच है' और 'तीस साल

बाद' कहानियों में प्रेम यथार्थ परिस्थितियों में जकड़ा हुआ है। 'मीरा नाची' और 'रंग महल में नाची राधा' कहानियों में प्रेम स्त्रीमुक्ति के साधन के रूप में प्रयुक्त हुआ है तो 'डसो मगर प्यार से' कहानी में प्रेम का भौतिकतावादी स्वरूप हमें दिखाई देती है।

मेरे लघु शोध-प्रबंध का **चतुर्थ अध्याय** 'चयनित कहानियों का शिल्पगत अध्ययन' है। इस अध्याय में चयनित कहानियों का उनकी भाषा, शैली, प्रतीक-बिंबों, संकेतों आदि शिल्पगत वैशिष्ट्य के आधार पर विवेचन, विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

अंत में, उपसंहार में सभी अध्यायों का मूल्यांकन किया गया है ।

मेरे इस लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण कराने में मेरे शोध निर्देशक डॉ. रामानुज अस्थाना जी के महत्त्वपूर्ण सुझावों के साथ ही साथ उनके स्नेहिल निर्देशन का विशिष्ट योगदान है। शोधकार्य के दौरान विषय चयन से लेकर शोध कार्य पूर्ण करने तक सर के अमूल्य सुझाव और अभिभावक के समान स्नेह मुझे हमेशा मिलता रहा। इसके लिए मैं उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए उनका विशिष्ट आभार व्यक्त करती हूँ। मैं अपने हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह की आभारी हूँ जिन्होंने उक्त विषय पर लघु शोध-प्रबंध कार्य करने का मुझे अवसर प्रदान किया। साथ ही भूतपूर्व विभागाध्यक्ष प्रो.सूरज प्रसाद पालीवाल जी की भी आभारी हूँ जिनका मार्गदर्शन मुझे समय-समय पर प्राप्त हुआ। इसके साथ ही साथ मैं अपने विभाग के अन्य सभी गुरुजनों की हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने मेरे शोध कार्य में आद्यंत अपेक्षित सहयोग प्रदान किया साथ ही साथ समय-समय पर मुझे अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों से अवगत कराया।

मैं अपने सभी मित्रों के प्रति भी अपना आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने मेरे सम्पूर्ण शोध कार्य में मेरी प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सहायता की। विशेष रूप से मैं अपने मित्रों आभा मलिक, प्रतिष्ठा मिश्रा, सुअंबदा कुमारी, स्वाति, आशीष कुमार, मेहराज अली, कार्तिक रॉय, सुबोध मिश्रा, विवेक कुमार की आभारी हूँ।

मेरे इस शोध कार्य के पूर्ण होने में मूल योगदान मेरे परिवार का है। जिन्होंने मेरा हमेशा उचित मार्गदर्शन किया, मेरा हौसला बढ़ाया और कठिन परिस्थितियों में भी जीवन में हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। जिसके लिए मैं अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य मेरे दादा-दादी, मम्मी-पापा, मेरे दोनों चाचा और चाची, बुआ, दीदी, बहन और भाइयों के प्रति कृतज्ञ हूँ। मैं अपने इस लघु शोध-प्रबंध को अपने शोध निर्देशक डॉ. रामानुज अस्थाना जी को और अपने समस्त परिजनों को समर्पित करती हूँ। शोध-प्रबंध में हुई किसी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

विभा मलिक